कृषि लोक
कृषि एवं किसान के लिए ई-पत्रिका
http://www.rdagriculture.in
e-ISSN No. 2583-0937

मटर के समन्वित कीट एवं रोकथाम के उपाय

अरविन्द कुमार, प्रदीप कुमार पटेल एवं विष्णु ओमर

कीट विज्ञान विभाग, आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कुमारगंज, अयोध्या उत्तर प्रदेश-224229

*संबंधित लेखक: ak847051@gmail.com

e-ISSN No. 2583-0937

परिचय

दलहनी सब्जियों में मटर का अपना एक अलग स्थान है। इसकी खेती से जहां एक ओर कम समय में पैदावार प्राप्त की जा सकती है वहीं ये भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने में भी सहायक है। फसल चक्र के अनुसार यदि इसकी खेती की जाए तो इससे भूमि उपजाऊ बनती है। मटर की फसल के लिए नम और ठण्डी जलवायु की आवश्यकता होती हैं अतः हमारे देश में अधिकांश स्थानों पर मटर की फसल रबी की ऋतु में उगाई जाती हैं। मटर की वृद्धि काल में कम तापक्रम की आवश्यकता होती है परन्तु फसल पर पाले का अत्यंत हानिकारक प्रभाव पड़ता हैं। फलियां बनने की प्रारम्भिक अवस्था में उच्च तापक्रम एवं शुष्क जलवायु का भी हानिकारक प्रभाव पड़ता है। मटर में मौजूद राइजोबियम जीवाणु भूमि को उपजाऊ बनाने में सहायत है। यदि अक्टूर व नबंवर माह के मध्य इसकी अगेती किस्मों की खेती की जाए तो अधिक पैदावार के साथ ही भूरपूर मुनाफा कमाया जा सकता है। आजकल तो बाजार में साल भर मटर को संरक्षित कर बेचा जाता है। वहीं इसको सूखाकर मटर दाल के रूप में भी इसका प्रयोग किया जाता है। मटर का प्रयोग हरी अवस्था में फलियों के रूप में सब्जी के लिए तथा सूखे दानों का प्रयोग दाल के लिए किया जाता हैं। मटर एक बहुत ही पोषक तत्वों वाली सब्जी हैं जिसमें प्रोटीन, कार्बोहाइडेट्स तथा विटामिन पर्याप्त मात्रा पाया जाता हैं। मटर की अच्छी पैदावार लेने के लिए इसको कीटों से बचाना बहुत जरुरी है। इसके प्रमुख कीट जैसे माहूँ, तने की मक्खी, पत्ती सुरंगक कीट एवं फली बेधक आदि प्रमुख कीट हैं।

प्रमुख कीट एवं नियंत्रण

माँहू (चेम्पा)

पहचान व हानि

यह गहरे हरे व पीले रंग 1 से 2 मिमी. के होते। इनके बच्चे और वयस्क दोनों ही पौधे का रस चूसने में सक्षम होते हैं। यह रस ही नहीं चूसते, बल्कि जहरीले तत्व भी छोड़ देते हैं। इसका भारी प्रकोप होने पर फलियाँ मुरझा जाती हैं। इनसे अधिक प्रकोप होने पर फलियाँ सुख जाती है। मांहू मटर का एक वायरस (विषाणु) को फैलाने में भी वाहक है। इस कीट का प्रकोप जनवरी के महीने से आरम्भ हो जाता है।

नियंत्रण

- प्रतिरोधक प्रजातियों का चयन करें ।
- मांहू का प्रकोप होने पर २ प्रतिशत फोरेट से बीज उपचार करना ।
- पौधे के तने अथवा अन्य भाग जहाँ पर माँहू की कालोनी दिखाई दें उसको तोड़कर नष्ट करें ।
- अजारड़रैक्टिन 300 पी.पी.एम. प्रति 5 से 10 मिली. प्रति लीटर या अजादी रैक्टिन 5 प्रतिशत प्रति 0.5 मिली. प्रति लीटर की दर से 10 दिनो के अन्तराल पर छिड़काव करें ।
- कीटनाशक जैसे इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. प्रति 0.5 मिली. प्रति लीटर या थायामेथेक्जाम 25 डब्लू.जी. प्रति 0.35 ग्राम प्रति लीटर या फेनप्रोथ्रिन 30 ई.सी. प्रति 0.75 ग्राम प्रति लीटर डाइमेथोएट 30 ई.सी. प्रति 2.5 मिली. प्रति लीटर या क्यूनालफॉस 25 ई.सी. प्रति 2.0 मिली. प्रति लीटर पानी की दर से 10 से 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करना चाहिए ।

e-ISSN No. 2583-0937

लीफ माईनर (पत्ती सुरंगक कीट)

पहचान व हानि

इसकी गिडार मटमैले सफेद रंग की होती है। नवजात गिडारें पत्तियों में इपीडर्मिस के नीचे सुरंग बनाकर पत्तियों को खाती है। सुरंगों के अन्दर ही मैगट प्यूपा में परिवर्तित होता है। प्यूपा भूरे या पीले रंग के होते हैं इनके प्रकोप से पत्तियाँ मुरझाकर सूख जाती हैं और पौधा पूर्णरूप से फूल और फली नहीं दे पाता है। जिसके फलस्वरूप प्रकोपित पत्तियों में सफेद रंग की टेढ़ी मेढ़ी रेखाएं बन जाती हैं। इसके आक्रमण के कारण प्रकाश संश्लेषण की क्रिया में बाधा उत्पन्न होती है। ज्यादा प्रकोप होने पर पूरी की पूरी फसल सूखकर नष्ट हो जाती है।

नियंत्रण

- प्रतिरोधी किस्मों का चुनाव करना चाहिए।
- नत्रजन का समुचित मात्रा में प्रयोग करना चाहिए।
- पौध के निचले भाग पर कीड़ों से प्रभावित पुरानी पातियों को तोड़कर नष्ट कर देना चाहिए।
- इसके नियंत्रण के लिए 4 प्रतिशत नीम गिरी चूर्ण का छिड़काव (40 ग्राम नीम गिरी) प्रति लीटर पानी में लाभकारी पाया गया है।
- कीटनाशक जैसे थायामेथेक्जाम 25 डब्लू.जी. प्रति 0.35 ग्राम प्रति लीटर या डाइमेथोएट 30

e-ISSN No. 2583-0937

ई.सी. प्रति 2.5 मि.ली. प्रति लीटर या क्यूनालफॉस 25 ई.सी. प्रति 2.0 मिली प्रति लीटर पानी की दर से 10 से 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करना चाहिए।

तना मक्खी

पहचान व हानि

इनके प्रकोप से पत्तियों, डंठलों और कोमल तनों में गांठें बनाकर मक्खी उनमें अंडे देती है। अंडों से निकली कर सुड़ी पत्ती के डंठल या कोमल तनों में सुरंग बनाकर अंदर ही अंदर खाती है, जिससे नये पौधे कमजोर होकर झुक जाते हैं और पत्तियां पीली पड़ जाती है। जिससे पौधों की बढ़वार रुक जाती है। अंततः पौधे मर जाते हैं।

नियंत्रण

- प्रतिरोधक प्रजातियों का चयन करें ।
- मांहू का प्रकोप होने पर २ प्रतिशत फोरेट से बीज उपचार करना ।
- कीटनाशक जैसे फेनप्रोथ्रिन 30 ई.सी. प्रति 0.75 ग्राम प्रति लीटर या डाइमेथोएट 30 ई.सी. प्रति 2.5 मिली. प्रति लीटर पानी की दर से 10 से 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करना चाहिए।

फली छेदक कीट

पहचान व हानि

इसकी इल्लियाँ हल्के हरे रंग के तीन धारी वाली सूड़ी फलों पर वृत्ताकार छेद बनाती हैं इस कीड़े को सूड़ी फलियों में छेद करके अन्दर बीज व कोमल भागों को खाती हैं जिसका सही पहचान यह है कि इसके शरीर का आधा हिस्सा बाहर व आधा हिस्सा अन्दर होता है ।

नियंत्रण

- प्रतिरोधक प्रजातियों का चयन करें ।
- नत्रजन का समुचित मात्रा में प्रयोग करना चाहिए।
- पौध की प्रभावित फलियों को तोड़कर नष्ट कर देना चाहिए ।
- इनके नियंत्रण एन.एस.के.ई. 4 प्रतिशत या बैसिलस थ्रूजेंसिस किस्म कुर्सटाकी (बी.टी.) प्रति 2.5 ग्राम प्रति लीटर को पुष्पावस्था के दौरान छिड़काव करें।
- कीटनाशक जैसे रेनेक्सपायर 15.5 एस.सी. प्रति 0.3 मिली प्रति लीटर या इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एस.जी. प्रति 0.45 ग्राम प्रति लीटर की दर से 12 से 15 दिनों के अन्तराल पर छिड़काव करें।